विपक्ष को बात कहने और सरकार को काम का मौका मिले

राज्यपाल राम नाईक राजनीतिक और प्रशासनिक हलके में अपनी जुदा-सी कार्यशैली के लिए जाने जाते हैं। उनका मानना है लोकतंत्र में विपक्ष को अपनी बात कहने का मौका जरूर मिलना चाहिए और सरकार को काम करने का...। उनका तीन साल का कार्यकाल आज पूरा हो रहा है। इस मौके पर हिन्दुस्तान के राज्य ब्यूरो प्रमुख आनंद सिन्हा से बातचीत में उन्होंने बताया कि सरकार के 100 दिन के कामकाज से संतुष्ट हैं। पेश हैं इसके मुख्य अंश :

खास बातचीत

- **कार्यकाल के तीसरे वर्ष को किस नजरिये से देखते हैं?**

तीसरे वर्ष में यह अंतर रहा कि जनता ने आदेश देकर परिवर्तन किया है। जनतंत्र की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण फैसला है। मैंने भी इस परिवर्तन में अपने ढंग से सहयोग किया। मेरा सहयोग ज्यादा मतदान के लिए प्रेरित करने के रूप में रहा। पिछली सरकार से मैंने कई विषय उठाए थे लेकिन उसने गंभीरता से नहीं लिया। यह सरकार मेरी बातें सुन रही है।

- **आपके अभिभाषण पर विधानसभा में हंगामे पर क्या कहेंगे?**

मैंने नई सरकार बनने पर प्रबोधन कार्यक्रम किया था। बताया था कि सरकार कैसे चले? विपक्ष भी था। मैंने कहा था-'अपोजिशन शुड हैव इट्स से...गवर्मेंट शुड हैव इट्स वे...' यानी विपक्ष को अपनी बात कहने का मौका मिलना चाहिए और सरकार को काम करने का। मुझे खेद है कि पुराना सिलसिला जारी रहा लेकिन मैंने पूरा भाषण पढ़ा।

- **विपक्ष ने विधानसभा में कामकाज का बहिष्कार किया। इसे कैसे देखते हैं?**

सदन में क्या हो रहा है इस पर कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। यह देखना विधानसभा अध्यक्ष का काम है। हां, इतना जरूर है कि कुछ लोगों के लिए हार को जल्दी हजम करना मुश्किल होता है। मैं वर्ष 2004 में चुनाव हार गया तो होर्डिंग लगवाईं। चुनाव हारा हूं हिम्मत नहीं, जनसेवा का मेरा व्रत चलता रहेगा निरंतर...। मुंबई के पांच लाख से ज्यादा लोगों ने मुझे वोट दिया था। उनका धन्यवाद दिया। हार जीत को गरिमापूर्ण ढंग से स्वीकार करना चाहिए। विधानसभा में नियमों के तहत व्यवहार करना चाहिए।

- **सरकार के 100 दिन के कामकाज को कैसा मानते हैं?**

मेरा मानना है कि सरकार को छह महीने मिलने चाहिए। सरकार ने सौ दिन का रिपोर्ट कार्ड देकर हिम्मत का काम किया है। अपना रिपोर्ट कार्ड देना आसान नहीं होता। सरकार का कामकाज सराहनीय रहा है। भ्रष्टाचार के खिलाफ दृढ़ इच्छाशक्ति है। दृढ़ता के साथ समस्या को हल करने का संकल्प है। पहले भी सरकार मेरी थी और अब भी मेरी है। जवाहरबाग कांड के बाद मैंने तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से कहा कि सरकारी जमीनों पर कब्जे हटवाएं। यूपी का स्थापना दिवस मनाएं और गाजियाबाद व अन्य प्राधिकरणों का आडिट कराएं लेकिन उन्होंने नहीं सुनी। नई सरकार ने जमीनों का अतिक्रमण पर अच्छा काम किया है। कई प्राधिकरणों का ऑडिट कराने का फैसला हुआ है।

- **लेकिन कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर विपक्ष सरकार को घेरता है?**

सुधार के लिए जनता की मानसिकता, अधिकारियों के व्यवहार में बदलाव जरूरी है। जरा-सी बात पर फायरिंग हो जाती है। डीएम एसपी का टांसफर जल्दी हो जाता है। इसे रोकना होगा। लखनऊ जैसे शहर जहां विकास हो रहा है क्षेत्रफल बढ़ रहा है, वहां पुलिस आयुक्त सिस्टम अपनाएं तो अच्छे परिणाम आएंगे। सरकार में बैठे लोगों को गंभीरता से व्यवहार करना चाहिए।

- **तीन सालों में उच्चशिक्षा की गुणवत्ता में क्या बदलाव कर सके?**

शैक्षिक सत्र 25 विश्वविद्यालयों में नियमित हुआ है, यह उपलब्धि है। शिक्षकों के खाली पदों पर 15 अगस्त से भर्तियां शुरू हो जाएंगी। मुझे लगता है कि सरकार शिक्षकों की रिटायर होने की उम्र 62 से 65 और कुलपतियों का कार्यकाल पांच साल करेगी।

- **क्या किसानों की हालत में सुधार को**

> जो संस्मरण प्रकाशित होते रहे और मैंने उन्हें जोड़कर पुस्तक का रूप दिया है। चरैवेति...चरैवेति इसका अर्थ है चलते रहो...चलते रहो जैसे मधुमक्खी विभिन्न पुष्पों से मधु एकत्र करती है। जैसे सूर्य दिनभर चल कर प्रकाश देता है। जो व्यक्ति बैठा रहता है उसका भाग्य भी बैठ जाता है। जो सोता है उसका भाग्य सो जाता है। जो निरंतर चलता रहता है यानी परिश्रम करता है उसका भाग्य आगे बढ़ता जाता है।

ऋण माफी ही काफी है?

वर्ष 1952 में देश गेहूं आयात करता था। आज हम गेहूं निर्यात कर रहे हैं। केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने कृषि को लेकर अच्छे फैसले किए हैं। आपको बताऊं कभी असम देश में पेट्रोलियम उत्पादन का मुख्य केंद्र था, अब गुजरात है। ऐसा नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता के चलते हुआ। विकास के लिए जो दृष्टि चाहिए उनके पास है।

- **इस उम्र में भी आप कैसे इतना परिश्रम करने में सक्षम हैं?**

यह मेरे अच्छे स्वास्थ्य के कारण संभव हो सका है। मेरे तीन मंत्र हैं नियमित व्यायाम, सीमित आहार और अनुशासन...। हमें स्कूल में नियमित 25 सूर्य नमस्कार करने होते थे। काम करने की जिद मैंने संघ से पाई। काम कैसे किया जाए, वहां कई उदाहरण देखने को मिले। मुझे वर्ष 1993 में कैंसर हुआ और फिर ठीक होकर जनता की सेवा में डटा हूं। हां, मैं रोज़ सोने से पहले दूसरे दिन की दिनचर्या तय कर देता हूं। लिहाजा मुझे नींद भी अच्छी आती है।

- **आपने राजभवन को जनसेवा की नई भूमिका दी है। यह कैसे कर सके?**

मुझे इस काम के लिए प्रोत्साहन लखनऊ के पत्रकारों ने दिया। उन्होंने पूछा कि आप जनता दरबार लगाएंगे? मैंने कहा राजभवन के दरवाजे हमेशा जनता के लिए खुले रहेंगे लोग आते गए। उनकी समस्याएं उठाता गया। सरकार को सुझाव देता गया और देखते-देखते पूरा चित्र बदल गया। हो सकता है मैं राजनेता से राज्यपाल बना इसलिए भी यह संभव हुआ हो...।

- **अपना आदर्श और सियासी गुरु किसे मानते हैं?**

मेरे आदर्श पिता रहे। वह हेडमास्टर थे। शिक्षा, आदर्श और पारदर्शिता के गुण उनसे मिले। कॉलेज के जीवन में आरएसएस के द्वितीय सर संघचालक गुरुजी गोल्वरकर से चर्चा, संवाद और काम कैसे करें सीखा। वैचारिक दृष्टि पं. दीनदयाल उपाध्याय और जननेता की दृष्टि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से मिली।